

Official Periodical of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

**SHRI SAI LEELA**

**श्री साई लीला**

\* Year 23 \* Issue 1 \* January-February 2023 \* ₹ 15/-

\* वर्ष २३ \* अंक १ \* जनवरी-फरवरी २०२३ \* ₹ १५/-

**In the morning of Sunday, January 1, 2023**





In the afternoon of Sunday, January 1, 2023



**SHRI SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI**  
**Hon'ble Members of Ad-hoc Committee**



**Shri Sudhakar Yarlagadda**  
(Chairman)  
Principal District & Sessions Judge,  
Ahmednagar



**Shri Siddharam Salimath (IAS)**  
(Member)  
District Collector, Ahmednagar



**Shri Rahul Jadhav**  
(Chief Executive Officer I/C)

Internet Edition - URL: <http://www.shrisaibabasansthan.org>



वर्ष २३      अंक १

सम्पादक : प्र. मुख्य कार्यकारी अधिकारी  
कार्यकारी सम्पादक : भगवान दातार



Year 23      Issue 1

Editor : Chief Executive Officer I/C  
Executive Editor : Bhagwan Datar

**अंतरंग**

❖ हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए! : डॉ. सुबोध अग्रवाल	४
❖ दत्त देव अवतार – सद्गुरु श्री साईनाथ : दास कुम्भेश	१०
❖ Shirdi News	15

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting**: Computer Section, Mumbai Office, Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office** : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar (East), Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24150798 E-mail : [saidadar@sai.org.in](mailto:saidadar@sai.org.in) ● **Shirdi Office** : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. [saibaba@shrisaibabasansthan.org](mailto:saibaba@shrisaibabasansthan.org) 2. [saibaba@sai.org.in](mailto:saibaba@sai.org.in) ● **Annual Subscription: Rs. 125/-** ● **Subscription for Life : Rs. 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : Rs. 1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue: Rs. 15/-** ● **Shri Sai Punyatithi Annual Special Issue : Rs. 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer I/C, on behalf of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Ganesh Art Printers, MR Trade Centre, Shop No. 7, Wadiya Park, Ahmednagar - 414 001 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

## हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!

स्वतः सिद्ध होकर भी साधकों के समान आचरण करने वाले हे मेरे साईं! आज विजयदशमी है और मुझे बरसों पुरानी घटना याद आ रही है। हुआ यों था - उस दिन मैं सपत्नीक शताब्दी रेल द्वारा देहरादून से दिल्ली की यात्रा कर रहा था। बराबर में बैठे एक सज्जन मोबाइल फोन पर अपने बेटे से बातें करने में मग्न थे। बेटे को दिए जा रहे ज्ञानवर्धक टिप्स को मैं बड़ी तन्मयता से सुन रहा था। पिता-पुत्र की वार्ता समाप्त हो जाने के उपरान्त मैंने भी उनसे कुछ सुनाने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने अहंकार के दुष्प्रभावों को समझाना प्रारम्भ किया ही था कि मेरे मुख से अनावश्यक रूप से सहसा निकल पड़ा - सर! मैं शिर्डी के भगवान् साईं बाबा का उपासक हूँ, अतः अहंकार से कोसों दूर हूँ। उन्होंने अपनी बात अधूरी ही छोड़ दी और वे चुप हो गए; उनके इस अप्रत्याशित मौन ने मुझे व्याकुल कर दिया। साहस बटोर कर मैंने उनसे उनकी बात जारी रखने का विनम्र अनुरोध किया। उन्होंने यों कहना पुनरारम्भ किया -

शिर्डी के साईं बाबा निःसंदेह ही सर्वशक्तिमान



ईश्वर हैं; या यों कहिए कि शिर्डीश्वर तो भगवान् शिव के साक्षात् अवतार हैं। आप साईं भक्त हैं - यह सुन कर मैं अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। रावण भी



तो शिव भक्त ही था। ब्रह्मा जी के पुत्र सारस्वत ब्राह्मण पुलस्त्य ऋषि के पुत्र विश्रवा के बेटे रावण का उल्लेख वाल्मीकि रामायण और श्री रामचरितमानस के अलावा पद्म पुराण, श्रीमद् भागवत पुराण, महाभारत, आनन्द रामायण, दशावतार चरित आदि हिंदू ग्रन्थों में भी मिलता है। इसके अतिरिक्त जैन ग्रन्थों में भी रावण का उल्लेख उपलब्ध है। जैन शास्त्रों में रावण को प्रति नारायण माना गया है। जैन धर्म के ६४ शलाका पुरुषों में रावण की गणना की जाती है। आधुनिक काल में आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा रावण पर वयम् रक्षामः नामक बहुचर्चित उपन्यास लिखा गया है। इसके अलावा पंडित मदनमोहन शर्मा 'शाही' द्वारा तीन खण्डों में लंकेश्वर नामक उपन्यास भी पठनीय है।

रावण अपने युग का उद्भट राजनीतिज्ञ, महाप्रतापी, महापराक्रमी, अत्यन्त बलशाली, शास्त्रों का प्रखर ज्ञाता, प्रकांड विद्वान्, पंडित एवं महाज्ञानी ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक भी था। आयुर्वेद, तंत्र और ज्योतिष के क्षेत्र में उसका योगदान महत्त्वपूर्ण है। इन्द्रजाल जैसी



अथर्ववेदमूलक विद्या का रावण ने ही अनुसंधान किया था।

यम और सूर्य तक को अपना प्रताप झेलने के लिए विवश कर देने वाला, प्रकांड विद्वान रावण एक कुशल राजनीतिज्ञ, सेनापति और वास्तुकला का मर्मज्ञ

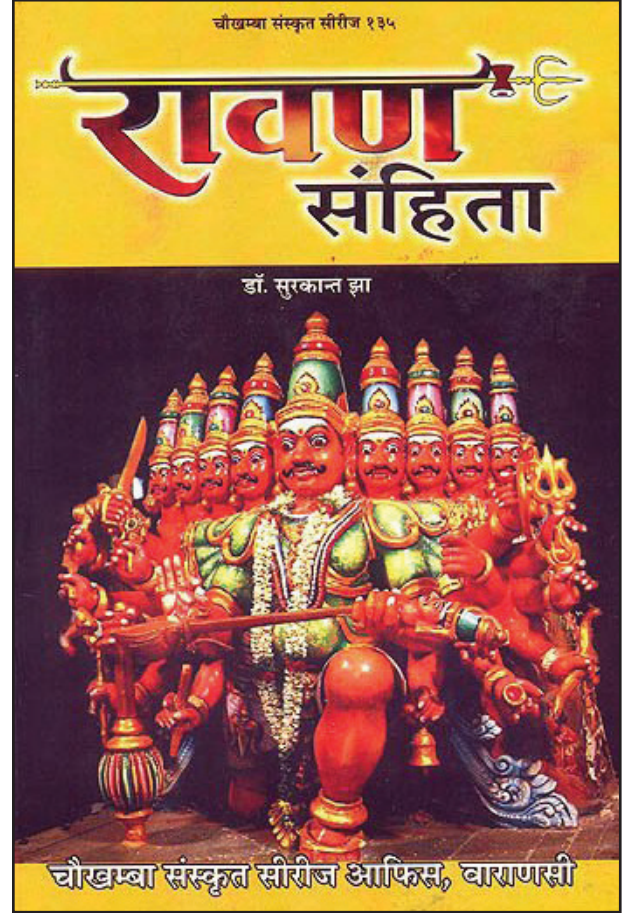


होने के साथ बहु विधाओं का जानकार भी था। यह भी उल्लेख मिलता है कि रावण ने कई शास्त्रों की रचना की थी। उस महाज्ञानी के रचे महाग्रन्थ आज भी चिकित्सा, शिक्षा, ज्योतिष और आध्यात्मिक क्षेत्र के विशेषज्ञों को राह दिखाते हैं।

चिकित्सा और तंत्र के क्षेत्र में रावण के ये ग्रन्थ चर्चित हैं - दस शतकात्मक अर्कप्रकाश, दस पटलात्मक उड्डीश तंत्र, कुमार तंत्र और नाडी परीक्षा। रावण ने ही शिव तांडव स्तोत्र, अरुण संहिता, रावण संहिता, अंक प्रकाश, इन्द्रजाल, प्राकृत कामधेनु, प्राकृत लंकेश्वर, ऋग्वेद भाष्य, रावणीयम आदि पुस्तकों की रचना की थी।

हे साईं! उस दिन उस विद्वान सहयात्री द्वारा रेल में परोसे गए उस ज्ञान भोज का मैंने भरपूर रसास्वादन किया था। मैंने थोड़ी देर पहले ही उनसे कहा था - सर! मैं शिर्डी के भगवान् साईं बाबा का उपासक हूँ। उन्होंने इस पर यों टिप्पणी की थी - रावण भी तो शिव का भक्त था!

हे बाबा! रावण की विद्वत्ता और अहंकार सर्वविदित ही हैं। रही मेरी बात, मैं सदैव से ही एक अज्ञानी, मूर्ख और मंदमति रहा हूँ और आज भी मेरी अज्ञानता, मूर्खता और मति की मंदता में तनिक भी सुधार नहीं हुआ है। हाँ, इतना तो अवश्य है कि गहन विचार करने पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि निश्चित ही मेरे



अहंकार को चूर्ण करने के लिए ही उन्होंने अपनी इस टिप्पणी रूपी अस्त्र का प्रयोग किया था, ताकि मैं भविष्य में सदैव के लिए निराभिमानी एवं विनम्र हो जाऊँ।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे द्वारकामाईधीश साईं! मुझे लगा कि अहंकार के कारण ही तो मैं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं को उत्कृष्ट मानने लगा हूँ। अहंकार के मद में चूर होकर ही मैं कभी भी दूसरों के अनुभवों और ज्ञान का उपयोग नहीं कर पाया। संसार के हर व्यक्ति में, चाहे वह कितना ही दुर्बल या दुर्गुणी क्यों न हो, कुछ अनुकरणीय अच्छाइयाँ अवश्य होती हैं। उन अच्छाइयों को 'अहम्' के कारण मैं न तो देख पाया और न ही





ग्रहण कर पाया। मेरा 'अहम्' सदैव दूसरों के अवगुणों को ही देखता रहा है। अहंकार ने मेरे व्यक्तित्व को उसी प्रकार धुंधला किए रखा, जैसे धधकते अंगारों पर जमी हुई राख की पर्त आँच की चमक को धुंधला किए रखती है। अनगिनत पापों को जन्म देने वाला यह अहंकार मुझमें आत्म-प्रशंसा के बीज से उत्पन्न हुआ है। खुद को सर्वोच्च मान लेने का भाव भी मुझमें इसी से पैदा हुआ है। दूसरों पर हावी रहने की प्रवृत्ति भी मुझमें इसी से उत्पन्न हुई है। न जाने कितने प्रकार के मानसिक रोग अहंकार के कारण ही मुझमें जन्में हैं। मैं जाने-अनजाने अनेक पाप अहंकार के कारण ही करता रहा हूँ। अहंकार न जाने कितने रूपों में आकर मुझे भ्रमित करता रहता है और मुझे अपने लक्ष्य से भटकाता रहा है। अहंकार के जाल में मैं कुछ उन्नति न कर पाया। मैं उचित व अनुचित का ज्ञान ही भूल बैठा। निंदा रस मेरे जीवन का स्वादिष्टतम रस बन कर रह गया।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे साईं! इस सत्य का परीक्षण करके कि मुझमें अहंकार रूपी बीज कितना अंकुरित हो चुका है, मैं अपना स्वमूल्यांकन करने हेतु उन कुछ घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ जिनके कारण अहंकारी लंकाधिपति दशानन को अपमानित होना पड़ा था। साथ ही आपसे दंडवत् विनती करता हूँ कि

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

एक बार राक्षसराज रावण कैलाश पर्वत पर भगवान् शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करने लगा। जब उसने तप से शिव जी को प्रसन्न होते हुए नहीं देखा तब वह यज्ञ वेदी पर अपना मस्तक काट-काट कर चढ़ाने लगा। जब वह अपना अंतिम शीश काटने को उद्यत हुआ तो भगवान् शंकर प्रसन्न होकर उसके समक्ष प्रकट हो गए।

भगवान् सदाशिव ने रावण को ज्ञान-विज्ञान, अतुल बल एवं युद्ध में अजेयता का वरदान प्रदान किया। फलस्वरूप रावण ने तीनों लोकों को वश में कर लिया। उसने देवताओं और ऋषियों को परास्त कर उन सब पर अपनी प्रभुता स्थापित कर ली। देवगण और ऋषिगण बहुत दुखी हुए। उन्होंने नारद जी से पूछा कि इस दुष्ट रावण से हम लोगों की रक्षा कैसे हो? नारद जी ने देवताओं को आश्वस्त करते हुए कहा - मैं इसका उपाय करता हूँ। तब जिस मार्ग से रावण जा रहा था, उसी मार्ग पर वीणा बजाते हुए नारद जी उपस्थित हुए और रावण से बोले -

राक्षसराज! तुम कहाँ से आ रहे हो और बहुत प्रसन्न दीख रहे हो? रावण ने सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। नारद जी ने कहा - शिव तो उन्मत्त हैं, तुम मेरे प्रिय शिष्य हो, इसलिए कह रहा हूँ, शिव पर विश्वास मत करो। दिए हुए वरदान को प्रमाणित करने के लिए कैलाश को उठाओ। यदि तुम उसे उठा लेते हो, तो तुम्हारा प्रयास सफल माना जायेगा।

कविवर श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी रचना कृष्ण की चेतावनी में लिखा है -

**'जब नाश मनुज पर छाता है,  
पहले विवेक मर जाता है।'**

अभिमानी दशानन ने कैलाश पर्वत को मूल से उखाड़ कर अपने कन्धों पर उठा लिया। पर्वत हिलते देख कर शिव जी ने कहा - यह क्या हो रहा है? तब पार्वती जी ने हँसते हुए कहा - आपका शिष्य आपको गुरु दक्षिणा दे रहा है। जो हो रहा है, वह ठीक ही हो रहा है। शिवशंभू जान गए कि रावण को अपनी शक्तियों पर दम्भ हो गया है। उन्होंने अपने पैर के अँगूठे से पर्वत को दबा दिया। बलदर्पित अभिमानी दशानन का कन्धा और हाथ पर्वत के नीचे दब गए। वह ज़ोर-ज़ोर से रुदन करने लगा। जब बहुत प्रयास के बाद भी रावण अपना हाथ नहीं निकाल पाया तो उसने वहीं खड़े-खड़े भगवान् शिव की स्तुति की और शिव तांडव स्तोत्र की रचना कर दी। इस पर भगवान् शिव ने प्रसन्न होकर उसे मुक्त कर दिया। तब रावण ने भगवान् शिव से अपने कृत्य के लिए क्षमा माँगी और उनकी शरण में आ गया।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे साईं! जनमानस के मन में बहुधा यह जिज्ञासा पैदा होती है कि जब भगवान् शिव के निवास स्थान कैलाश पर्वत तक को उठा कर रावण ने अपने अतुलित







बलशाली होने का प्रमाण प्रदर्शित कर दिया था तब सीता स्वयंवर में शिव धनुष क्यों हिला तक न सका था!

हे शिर्डीश्वर! इसका कारण श्री रामचरितमानस में वर्णित एक चौपाई से समझा जा सकता है -

‘उठहु राम भंजहु भव चापा,  
मेठहु तात जनक परितापा।’

इसका अर्थ है - ‘हे पुत्र श्री राम उठो और भवसागर रूपी इस धनुष को तोड़ कर महाराजा जनक की पीड़ा का हरण करो।’ इस चौपाई में ‘भव चापा’ शब्द का अर्थ है - धनुष को उठाने के लिए शक्ति की नहीं, वरन् प्रेम की आवश्यकता है। जो अहंकार से कोसों दूर हो, अहं-शून्य हो, अभिमान रहित हो, दयालु हो, मृदु भाषी व कृपालु हो - ऐसे ही सद्गुणों से युक्त व्यक्ति ही इस धनुष को उठा सकता था; मगर रावण अहंकारी था, उसमें घमंड कूट-कूट कर भरा था, वह हर वस्तु को शक्ति से पाना चाहता था - इसी कारण स्वयंवर में वह इस धनुष को हिला तक न सका था।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे बाबा! वेदों के संरक्षण की दिशा में रावण का योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। रावण ने ही कृष्ण यजुर्वेद से लेकर वेदों की यत्र-तत्र फैली ऋचाओं को पहले तो एकत्रित किया और फिर क्रमबद्ध कर उन्हें संपादित कर ऋग्वेद नाम दिया। संस्कृत साहित्य के अधिकृत विद्वान वाचस्पति गैरोला ने अपनी पुस्तक संस्कृत साहित्य का इतिहास में लिखा है, शिवस्तोत्र, कृष्ण यजुर्वेद का भाष्य, ऋग्वेदीय पद पाठ आदि रावण द्वारा रचित और संपादित धार्मिक



रचनाएँ हैं। यह भी पता चला है कि रावण ने माध्यांदिन संहिता पर भी भाष्य लिखा था और सस्वर वेद पाठ की प्रणाली का प्रचलन भी रावण ने ही शुरू किया था। इसीलिए तुलसीदास के श्री रामचरितमानस में हनुमान जब सीता की खोज के सिलसिले में लंका में प्रवेश करते हैं तो उन्हें वहाँ के शिव मंदिरों में वेदों की ऋचाओं के स्वर गूँजते सुनाई देते हैं।

अपनी इसी विद्वत्ता के कारण ही रावण ने प्रभुता प्राप्त की थी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में बहुत पहले लिखा था -

‘नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं।

प्रभुता पाई जाहि मद नाहीं॥’

अर्थात्, ‘संसार में ऐसा कोई नहीं है जिसको प्रभुता पाकर घमंड न हुआ हो।’

कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी रावण के अहंकार को ही उसका मुख्य अवगुण मानते हैं।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे साईं! शिव भक्त दशानन रावण अहंकार और अत्याचार का प्रतिरूप माना जाता है। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण उसे कार्तवीर्य अर्जुन के हाथों पराजित होकर अपमानित होना पड़ा था -

कार्तवीर्य अर्जुन प्राचीन हैहय वंश के राजा थे, जिनका उल्लेख हिंदू पौराणिक कथाओं में भी उपलब्ध है। वे प्राचीन माहिष्मति नगरी के राजा थे, जो कि वर्तमान मध्य प्रदेश का महेश्वर नगर है। वे चन्द्रवंश के महाराजा कृतवीर्य के पुत्र थे। उनकी माता का नाम पद्मिनी था। सम्राट कार्तवीर्य अर्जुन की राजधानी नर्मदा नदी के तट पर थी, जिसे इन्होंने कार्कोटक नाग से जीत कर बसाया था। उन्हें सहस्रबाहु अर्जुन भी कहते हैं। उनकी एक सहस्र (एक हजार) भुजाएँ थीं। कार्तवीर्य अर्जुन ने अपनी कठोर भक्ति साधना से भगवान् नारायण के दशावतार दत्तात्रेय जी को प्रसन्न कर लिया था। बदले में कार्तवीर्य अर्जुन ने दत्तात्रेय जी से एक हजार भुजाओं को प्राप्त करने का वरदान प्राप्त कर लिया। इसी के साथ उन्हें अबाध बल, अकूट संपत्ति, वीरता, कीर्ति, अदम्य साहस और शारीरिक बल भगवान् की कृपा से मिले। भगवान् दत्तात्रेय ने अर्जुन को योग विद्या, अणिमा आदि जैसी दुर्लभ विद्याएँ प्रदान कर दीं। संसार का कोई भी सम्राट यज्ञ, दान, तपस्या, योग, शास्त्र और पराक्रम में अर्जुन की बराबरी नहीं कर सकता था। एक बार सहस्रार्जुन अपनी



५०० रानियों के साथ नर्मदा नदी में जलक्रीड़ा के लिए गए। नर्मदा में उस समय पानी कम था। जो पानी था, नीचे की ओर प्रवाहित हो रहा था। रानियों को जलक्रीड़ा में असुविधा हुई। कार्तवीर्य ने अपनी हजार भुजाओं से नर्मदा



का पानी रोक कर उसकी दिशा बदल दी। नर्मदा के ही किनारे एक स्थान पर लंकापति रावण शिवलिंग बना कर भगवान् शिव जी की पूजा कर रहा था। नर्मदा के प्रवाह में आए बदलाव से उसकी पूजा भंग हो गई। लंका से लाए गए पूजा के पुष्प आदि जल में समा गए। इससे रावण को भयंकर क्रोध आ गया। वह तत्काल देखने पहुँचा कि आखिर नर्मदा ने ऐसी धृष्टता कैसे की। नर्मदा ने कहा कि यह सब कार्तवीर्य अर्जुन के कारण हुआ है। रावण को अपने बल का बड़ा अभिमान था। वह सहस्रार्जुन की शक्तियों से परिचित नहीं था। इसलिए उसने सहस्रार्जुन को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया। पत्नियों के समक्ष हो रहे इस अपमान से सहस्रार्जुन क्रोधित हो गए। उन्होंने रावण को चेतावनी दी - ब्राह्मण समझ कर मैं तुम्हें दंड नहीं दे रहा हूँ, किन्तु अब सहनशीलता खत्म हो चुकी है। यदि अब एक शब्द भी और कहे तो दंड मिलेगा। रावण



तो स्वयं ही बड़ा अभिमानी था। उसने राक्षस सेना के साथ सहस्रबाहु को युद्ध के लिए ललकार दिया। उसी स्थान पर युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों की सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। सहस्रार्जुन स्वयं रावण से युद्ध कर रहे थे। सहस्रार्जुन ने रावण को परास्त कर दिया, किन्तु ब्राह्मण होने के कारण उसका वध नहीं किया, बल्कि एक खम्भे से बाँध कर अपने बंदीगृह में रख दिया। इन्द्र के आसन और कैलाश पर्वत तक को हिला कर रख देने वाले, महाज्ञानी और महाशक्तिशाली रावण को पराजय का सामना करना पड़ा। लंकानगरी राजाविहीन हो गई। रावण के भाई और अन्य रिश्तेदार उसके दादा पुलस्त्य मुनि के पास पहुँचे और उन्हें सारी बात बतलाई। उन्होंने पुलस्त्य से रावण की रक्षा करने की विनती की। पुलस्त्य मान गए। वे सहस्रार्जुन की नगरी माहिष्मती जा पहुँचे। सहस्रार्जुन ने पुलस्त्य का बहुत आवभगत किया और पूरे आतिथ्य के बाद उनके आगमन का कारण पूछा। पुलस्त्य ने कहा कि वे दान माँगने आए हैं। सहस्रार्जुन उन्हें अपना सर्वस्व दान देने को तैयार हो गए। पुलस्त्य ने उनसे रावण को दान में माँग लिया। सहस्रार्जुन ने तुरंत ही रावण को कारागार से मुक्त कर दिया।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

विश्व की बृहत् नाट्यशाला में एक महान अभिनेता



के सदृश अभिनय करने वाले हे मेरे साईं! आप जानते ही हैं कि बालि रामायण का एक ऐसा पात्र था जिसने रावण के अहंकार को पैरों तले रौंद दिया था। उसने भगवान् राम से पहले ही रावण को बुरी तरह परास्त कर दिया था और उसे बहुत अपमानित भी किया था। रावण, जो अपने आपको सर्वशक्तिमान समझता था, वह बालि के सामने क्षमा माँगने को विवश हो गया था। बालि को स्वयं भगवान् ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त था कि उसे जो कोई भी युद्ध की चुनौती देगा उसका आधा पराक्रम बालि के अंदर आ जाएगा। अर्थात्, बालि जिस किसी से भी युद्ध करेगा तब उसके प्रतिद्वंद्वी का आधा बल बालि के अंदर आ जाएगा और साथ ही उसके प्रतिद्वंद्वी की शक्ति भी आधी रह जाएगी। चूँकि बालि पहले से ही बहुत शक्तिशाली था और अपने प्रतिद्वंद्वी का आधा बल उसके अंदर आ जाने से वह संभवतया उससे अधिक शक्तिशाली हो जाता, इसलिए उसे सामने से हराना असम्भव था। जब रावण को बालि के पराक्रम व शौर्य का पता चला तो वह उससे ईर्ष्या करने लगा। एक दिन इसी ईर्ष्या में वह बालि की नगरी किष्किन्धा गया और उसे युद्ध के लिए ललकारा। बालि किसी भी शत्रु की ललकार को अनदेखा नहीं करता था और उससे युद्ध अवश्य करता था। इसलिए वह रावण से युद्ध करने गया। बालि और रावण के बीच में भीषण युद्ध हुआ और वरदान स्वरूप रावण की आधी शक्ति बाली के अंदर प्रवेश कर गई, जिस कारण बालि ने रावण को परास्त कर दिया। उसके बाद उसने रावण को अपने कारावास में बंदी बना लिया और उसका प्रतिदिन अपमान करने लगा। बालि प्रतिदिन सुबह किष्किन्धा की चारों दिशाओं में समुद्र के चक्कर लगा कर आता था और सूर्यदेव की पूजा करता था। अब वह राजा रावण को अपनी काँख में दबा कर चारों दिशाओं में घूमता और सभी के सामने उसे लज्जित करता। बालि के द्वारा प्रतिदिन इस प्रकार अपमानित होने से रावण अत्यन्त लज्जित हुआ। लगभग छः माह तक बालि रावण को अपनी काँख में दबाए यूँ ही घूमता रहा और अंत में रावण ने बालि से क्षमा माँग ली। इसके बाद रावण अपमानित और लज्जित होकर वापस लंका चला गया।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

जब भक्त में अहंकार की वृद्धि होने लगती है तब शक्ति प्रदान कर उसे अहंकार शून्य बना कर अंतिम

ध्येय की प्राप्ति करा देने वाले हे मेरे साईं! महाबलशाली, समस्त मंत्र-तंत्र के ज्ञाता और ज्योतिष शास्त्र के प्रकांड विद्वान रावण को अपनी शक्तियों पर अत्यन्त घमंड हो गया और उसने पाताल लोक पर कब्ज़ा करने की ठानी। मगर वह भूल गया कि पाताल लोक में किसी अन्य लोक की शक्तियाँ काम नहीं करतीं। रावण पाताल लोक पहुँच कर राजा बलि को युद्ध के लिए ललकारने लगा। उसी समय वहाँ बच्चे खेल रहे थे। बच्चे रावण को देख कर आश्चर्य में पड़ गए और उसे पकड़ने लगे। रावण अपनी शक्तियों का प्रयोग नहीं कर पा रहा था। बच्चों ने रावण को पकड़ कर घोड़ों के अस्तबल में बाँध दिया। जब यह घटना राजा बलि को पता चली तब उन्होंने रावण को बच्चों की कैद से मुक्त करवा दिया।

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे साईं! मेरे जीवन से अहंकार दूर भगाने के लिए एक मात्र आप ही सक्षम हैं। अहंकार का नाश होने पर ही मुझमें विनम्रता की भावना उत्पन्न होगी। अंदर की असीम अक्षय शक्ति को जाग्रत करने वाली विनम्रता अवश्य ही हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करेगी। ज्ञान ज्योति जलने से अंतरतम के अंधकार में रहने वाले सभी मानसिक रोग भाग जाएंगे। विनम्रता से मेरे हृदय में प्रार्थना और भक्ति के द्वार खुलेंगे। भक्ति के जरिए प्रायश्चित्त करके अपने हृदय को मैं पवित्र कर पाऊँगा। मन से उत्पन्न होने वाली अतृप्त कामनाओं का नाश करने वाली भक्ति मुझे आपके विराट रूप का दर्शन कराएगी। जब विनम्रता की थाली में क्षमता की आरती, प्रेम का घृत, दृढ़ विश्वास का नैवेद्य आपको समर्पित करूँगा, तब प्रायश्चित्त की आरती जलने पर इसकी लौ में 'मैं' रूपी अहंकार का राक्षस जल कर भस्म हो जाएगा। इस भाँति

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

हे साईं! मैं अपना समस्त अहं त्याग कर आपकी शरणागत हूँ -

**हे साईं! आप मुझे रावण बनने से बचाइए!**

**- डॉ. सुबोध अग्रवाल**

'शिडीं साईं धाम'

२९, तिलक रोड, देहरादून - २४८ ००१, उत्तराखण्ड.

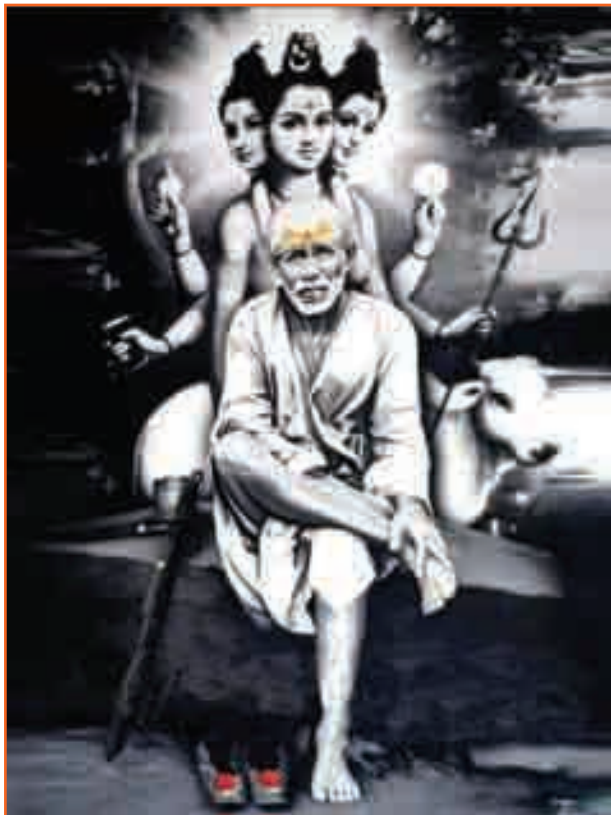
ई-मेल : [subodhagarwal27@gmail.com](mailto:subodhagarwal27@gmail.com)

संचार ध्वनि : (०)९८९७२०२८१०



# दत्त देव अवतार – सद्गुरु श्री साईंनाथ

(पिछले अंक से क्रमशः)



एक बार की बात है। तुम्हारे परम भक्त, नानासाहेब चाँदोरकर खानदेश के जामनेर में मामलतदार थे। उनकी पुत्री मैनाताई को प्रसव वेदना हो रही थी; पर प्रसव नहीं हो रहा था। उसकी हालत गम्भीर थी। कष्ट भी बहुत हो रहा था। दुर्भाग्यवश, उस समय नानासाहेब के पास तुम्हारी कष्ट निवारक उद्दी नहीं थी। उन्हें बड़ी चिंता हो रही थी। तब उन्होंने तुम्हारा ध्यान किया और मन ही मन तुमसे सहायता की प्रार्थना की। जामनेर शिर्डी से लगभग २२७ किलोमीटर दूर था। पर, तुम तो अंतर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी थे। करीब २२७ किलोमीटर दूर तुम्हारे भक्त ने तुम्हारा ध्यान किया और तुम्हें भान हो गया कि भक्त संकट में है और सहायता के लिए तुम्हें पुकार रहा है। तुमने तुरंत उसके संकट समाधान की युक्ति सोच ली। ठीक उसी समय तुम्हारा भक्त रामगीर बुवा जिन्हें तुम कभी बापूगीर, तो कभी गोसाईं कह कर बुलाते थे, तुम्हारे पास आए और खानदेश में अपने गाँव जाने के लिए तुमसे अनुमति माँगने लगे। तुमने सहर्ष अपनी अनुमति देते हुए

कहा, “खुशी से जाओ, गोसाईं। पर, पहले जामनेर जाकर यह उद्दी (विभूति) और आरती नाना को दे देना।” बुवा क्षमा याचना करते हुए बोले, “बाबा! मेरे पास केवल दो रुपये हैं, जिससे मैं जलगाँव तक ही जा सकूँगा। उससे आगे लगभग ३७ किलोमीटर की यात्रा करना सम्भव नहीं होगा।” तुमने कहा, “बापूगीर! पैसों की चिंता क्यों करता है? सब व्यवस्था हो जाएगी। तू जा तो सही!” बुवा निरुत्तर हो गए। उन्हें तुम्हारी आज्ञा का पालन तो करना ही था। तुम पर विश्वास और भरोसा भी था। वे उद्दी और आरती लेकर शिर्डी से रवाना हो गए। साईंनाथ! आरती, जो तुमने बुवा को दी थी, वही आरती थी, जो तुम्हारी आराधना के लिए तुम्हारे समक्ष मस्जिदमाई में होती थी और आज भी नियमित रूप से प्रतिदिन निर्धारित समय पर समाधि मंदिर और अन्यानेक लाखों साईं मंदिरों में होती है। कृष्ण भक्त श्री रामाजनार्दनी द्वारा लिखित “आरती ज्ञानराज” पर आधारित माधवराव आडकर की





रची “आरती साईं बाबा”! आखिर कृष्ण भगवान् और तुममें अंतर ही क्या है! इसलिए जैसी आरती कृष्ण कन्हैया की होती है, वैसी ही आरती तुम्हारे लिए रची गई। सुनोगे वह आरती, बाबा? ऐसे तो तुम रोज़ ही सुनते हो; पर आज मैं सुनाता हूँ, महाराज!

आरती साईंबाबा। सौख्यदातार जीवा।  
चरणरजातलीं दयावा। दासां विसांवा।।  
भक्तां विसांवा। आरती साईंबाबा...

(अर्थात्, हम सब जीवों को सुख देने वाले साईं बाबा की आरती करते हैं। हे बाबा! हम दासों और भक्तों को अपनी चरण धूलि का आश्रय दीजिए।)

जाळुनियां अनंग। स्वस्वरूपीं राहे दंग।  
मुमुक्षुजनां दावी। निज डोळां श्रीरंग।।  
आरती साईंबाबा...

(काम और कामनाओं को जला कर आप आत्मस्वरूप में लीन हैं। मुक्ति की कामना करने वाले मुमुक्षु जन आपके विष्णु स्वरूप का दर्शन करें। उन्हें आत्मसाक्षात्कार दीजिए।)

जया मनी जैसा भाव। तया तैसा अनुभव।  
दाविसी दयाघना। ऐसी तुझी ही माव।।  
आरती साईंबाबा...

(जिसके मन में जैसा भाव, आप उसे वैसा ही अनुभव देते हैं। ऐसी आपकी माया है।)

तुमचे नाम ध्याता। हरे संसृती व्यथा।  
अगाध तव करणी। मार्ग दाविसी अनाथा।।  
आरती साईंबाबा...

(आपके नामस्मरण मात्र से सांसारिक व्यथा नष्ट हो जाती है। आपकी करनी अगाध है। हे साईं, हम अनार्थों को राह दिखाइए।)

कलियुगीं अवतार। सगुण ब्रह्म साचार।  
अवतीर्ण झालासे। स्वामी दत्त दिगंबर।।  
आरती साईंबाबा...

(आप ही परब्रह्म के कलियुगी सगुण अवतार हैं। आप ही ब्रह्मा-विष्णु-महेश के एकात्म रूप भगवान् स्वामी दत्तात्रेय दिगंबर के अवतार रूप में अवतीर्ण हुए हैं।)

आठां दिवसां गुरुवारीं। भक्त करिती वारी।  
प्रभुपद पहावया। भव भय निवारी।।

(प्रत्येक गुरुवार भक्त शिर्डी तीर्थ की यात्रा और भव-भय निवारण हेतु आपके श्री-चरणों का दर्शन करते हैं।)

माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरजसेवा।  
मागणें हेंचि आतां। तुम्हां देवाधिदेवा।।

(आपके चरणरज की सेवा ही हमारी समस्त निधि है। हे देवों के देव, यही हमारी कामना है।)

इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निजसुख।  
पाजावें माधवा या। सांभाळ आपुली भाक।।

(जिस प्रकार चातक पक्षी को स्वाति नक्षत्र के निर्मल वर्षा जल की बूंद की अभिलाषा रहती है, वैसी ही इस माधव (आरती के रचनाकार) की है। उन्हें अपने निर्मल ज्ञान और विवेक की भिक्षा देकर अपनी महिमा से अनुग्रहीत कीजिए।)

हे दत्तावतार, राजाधिराज! जब रामगीर बुवा शिर्डी से निकले, तब आगे क्या हुआ, वह वृत्तांत सुनिए। जलगाँव पहुँच कर वे द्विधा में पड़ गए। अब आगे जामनेर कैसे जाएँ? यात्रा के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे उनके पास। तभी एक व्यक्ति आया और लोगों से पूछने लगा, “आपमें से शिर्डी से आने वाले बापूगीर बुवा कौन हैं?” बुवा ने आगे बढ़ कर कहा, “मैं हूँ। कहो, क्या बात है?” उस व्यक्ति ने कहा, “नानासाहेब ने आपके लिए ताँगा भेजा है। चलिए, बैठिए।” बुवा ने सोचा, ‘अवश्य ही शिर्डी से जामनेर बाबा का संदेश गया होगा, तभी तो नानासाहेब चाँदोरकर ने ताँगा भेजा है।’ वे खुशी-खुशी ताँगे में बैठ गए। जैसा शानदार ताँगा था, वैसे ही जानदार घोड़े थे। ताँगा जामनेर जाने वाले रास्ते पर सरपट दौड़ने लगा और सवेरा होते-होते जामनेर पहुँच गया। उसी समय बुवा को लघुशंका करने की ज़रूरत महसूस हुई। वे ताँगे से उतर कर लघुशंका के लिए थोड़ी दूर एकांत में गए। लौट कर देखा, तो वहाँ न ताँगा था, न ताँगे वाला! ढूँढ़ने पर भी उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया।

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे जामनेर में नानासाहेब चाँदोरकर के घर पहुँचे और तुम्हारी दी हुई उदी (विभूति) और आरती की प्रतिलिपि उन्हें सौंप दी। नानासाहेब उदी और आरती पाकर बहुत प्रसन्न हुए, जैसे भूखे को भोजन और प्यासे को पानी मिल जाए! उन्होंने पत्नी से तुरंत पुत्री को उदी का सेवन कराने के लिए कहा और स्वयं बाहर बैठ कर





तुम्हारी भेजी हुई आरती का वाचन करने लगे। कुछ ही देर में घर के भीतर से खुशखबरी आयी कि पुत्री का प्रसव बिना कष्ट आराम से हो गया है। नानासाहेब की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने ठीक समय पर उदी और आरती लाकर उन पर उपकार करने के लिए बुवा को धन्यवाद दिया। बुवा ने भी जलगाँव तक ताँगा भेजने के लिए नानासाहेब का धन्यवाद किया। तब नाना चकित होकर बोले, “ताँगा? कैसा ताँगा? मैंने कोई ताँगा या ताँगे वाला नहीं भेजा। मुझे तो आपके आने की पूर्व सूचना तक नहीं थी; फिर ताँगा क्यों भेजूँगा?” फिर ज़रा रुक कर उन्होंने कहा, “अरे बुवा! यह शिर्डी का फ़कीर बड़ा नट-नाटकी

है। यह सब उसकी ही लीला है। तुम्हें यहाँ तक लेकर आने वाला कोई और नहीं, वही लीलाकारी बाबा साई है। अपने भक्तों को संकट में देख कर कभी ताँगा भेजता है, कभी ताँगे वाला बन जाता है, तो कभी खुद ही दौड़ कर चला आता है। वह सात समंदर पार से भी अपने भक्त की पुकार सुन लेता है।” नाना की बात सुन कर अब बुवा को भी तुम्हारे शब्दों का स्मरण हो आया। तुमने बुवा से कहा था, “अरे गोसाई! क्यों पैसों की चिंता करता है? जामनेर जाने की सब व्यवस्था हो जाएगी। तू जा तो सही!”

हे दत्त गुरु साई माँ! अब मैं तुम्हें तुम्हारी दूसरी लीला सुनाता हूँ। सुनोगे न? क्यों नहीं सुनोगे भला! तुम तो अपने भक्तों की हर बात, हर आवाज़ सुनते हो। एक बार गोवा से दो मित्र महानुभाव तुम्हारा दर्शन करने शिर्डी आए। दोनों ने तुम्हें साष्टांग प्रणाम किया। किंतु, तुमने एक सज्जन से पन्द्रह रुपये की दक्षिणा माँगी, जो उसने खुशी-खुशी दे दी। यह देख कर उसके मित्र ने भी अपनी जेब से पैंतीस रुपये निकाले और तुम्हें दक्षिणा में देने लगा। तुमने उससे दक्षिणा लेने से मना कर दिया। उस समय शामा वहीं खड़ा था, उसने कहा, “देवा! यह कैसा भेदभाव? दोनों मित्र एक साथ गोवा से आए हैं। तुमने एक से तो दक्षिणा माँग कर ली; लेकिन दूसरा अपनी खुशी से देना चाहता है, तो इन्कार क्यों कर रहे हो?” तब तुमने उत्तर दिया, “शामा! तुम नादान हो। मैं किसी से कुछ नहीं लेता, न माँगता हूँ। क्या, मेरा घरबार है, बाल-बच्चे हैं, जिनके लिए माया जोड़ूँगा? यह तो मस्जिदमाई है, जो अपना क़र्ज़ माँगती है। उधार, बैर और हत्या के क़र्ज़ चुकाने ही पड़ते हैं। इस जन्म में चुकता हो जाए, तो अच्छा; वरना अगले जन्म में भोगना पड़ता है। ऋण तो चुकाना ही पड़ता है। अब सुन, शामा, दूसरी बात... एक बार मैं घूमते-घूमते एक हवेली में पहुँच गया। बहुत थक गया था। हवेली के ब्राह्मण रसोइया ने मुझे स्वादिष्ट भोजन खाने को दिया। भरपेट बढ़िया भोजन करने से मुझे नींद आने लगी। उसी ब्राह्मण रसोइया ने मुझे आराम करने के लिए हवेली में आरामदायक स्थान दिया। मैं भर नींद सोकर उठा, तो क्या देखा कि मेरी जेब से तीस हज़ार रुपये चोरी हो गए हैं! मैं रोने लगा। एक फ़कीर ने मुझे रोते देखा, तो कारण पूछा। मैंने उसे सारा हाल बता दिया। तब फ़कीर ने सुझाव दिया, ‘मैं तुम्हें एक दूसरे फ़कीर का पता बताता हूँ। उसकी शरण में जाओ, तब तक अपना सबसे प्रिय भोज्य

पदार्थ मत खाना। वह फ़कीर तुम्हारी सब परेशानी दूर कर देगा।' मैंने वैसा ही किया और सचमुच, मेरी परेशानी दूर हो गई! मेरे चोरी हुए तीस हज़ार रुपये मुझे वापस मिल गए। तब मैं समुद्र किनारे पहुँचा। वहाँ एक जहाज़ खड़ा हुआ था। मुझे दूसरे किनारे पर जाना था; लेकिन जहाज़ यात्रियों से खचाखच भरा हुआ था। जहाज़ के एक कारिंदे ने मेरी मदद की और जहाज़ में बैठने की जगह दिला दी। मैं दूसरे किनारे पर पहुँच गया। वहाँ से यहाँ मस्जिदमाई में आ गया।"

बाबा! इस तरह तुम अपनी आपबीती सुना कर थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। फिर शामा से बोले, "इन दोनों महानुभावों को अपने घर ले जाकर भोजन कराओ!" शामा तुम्हारी आज्ञा से उन दोनों मेहमानों को अपने घर ले गया और उन्हें प्रेम भाव से भोजन कराया। उसके बाद जिज्ञासापूर्वक उन दोनों से पूछा, "महाशय! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। बाबा शिर्डी से बाहर कहीं कभी नहीं गए; फिर वे कहाँ जाकर कौन-सी हवेली में पहुँचे? बाबा ने कभी एक घेला नहीं जोड़ा; फिर उनके कौन से तीस हज़ार रुपये कब चोरी हुए? बाबा ने कभी समुद्र नहीं देखा; फिर वे कौन से जहाज़ में सवार होकर यहाँ आए? क्या, आपकी समझ में कुछ आया?" शामा का यह जिज्ञासापूर्ण प्रश्न सुनते ही उन दोनों मेहमानों की आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं। कुछ देर बाद एक ने कहा, "श्रीमान् शामा जी! साईं परब्रह्म हैं; सर्वज्ञ हैं, सर्वत्र, सर्वव्यापी हैं। भगवान् दत्तात्रेय के साक्षात् अवतार हैं। धन्य है यह शिर्डी धरा, जहाँ हमारे दत्त प्रभु सबके कल्याण के लिए सद्गुरु फ़कीर के रूप में प्रकट हुए। धन्य हैं आप सब शिर्डी ग्रामवासी, जो साक्षात् दत्तावतार के साथ रहते हैं। दिन-रात, उसके साथ हँसते-बोलते, उठते-बैठते, चलते-फिरते हैं। साईं बाबा ने जो भी कहा, उसका रत्ती-रत्ती सत्य है। मैं रोज़गार की तलाश में गोवा गया था। एक दिन मैंने भगवान् दत्तात्रेय से मन ही मन प्रार्थना की और मनौती मानी, 'हे दत्त देव! मुझे अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए नौकरी दिला दें। मैं अपने पहले महीने का वेतन आपको अर्पण करूँगा।' दत्त देव की कृपा से मुझे जल्दी ही नौकरी मिल गई। शुरुआत में पन्द्रह रुपये माहवार मिलते थे। धीरे-धीरे तरक्की होती गई। वेतन भी पन्द्रह से तीस, तीस से साठ, फिर सौ, और होते-होते वेतन सात सौ रुपये महीने तक पहुँच गया।

लेकिन, मैं अपना वचन भूल गया था। आज जब शिर्डी आया, तो साईनाथ ने मुझसे पन्द्रह रुपये की दक्षिणा माँग कर मुझे मेरी मनौती का स्मरण करा दिया। मेरे पहले महीने का वेतन, ठीक पन्द्रह रुपये! न एक रुपया कम, न एक रुपया ज्यादा!! बाबा ने कोई दक्षिणा तक नहीं ली, बल्कि मुझे देव ऋण से उक्लण करके मुझ पर भारी उपकार किया है। बाबा देवावतार न होते, तो उन्हें कैसे ज्ञात हुआ कि मैंने कितने रुपये दत्त देव को अर्पण करने की मनौती मानी थी! ठीक पन्द्रह रुपये!! 'धन्य हो देवा! तुमने मुझे देव ऋण से मुक्त कर दिया।' " इतना कह कर उसने अपनी आँखें मूँद लीं और हाथ जोड़ कर तुम्हें मानसिक प्रणाम किया। उसकी बंद आँखों से भी आँसू टपक रहे थे। उसके चुप होते ही शामा का दूसरा मेहमान कहने लगा, "श्रीमान जी, अब मेरी कथा भी सुन लीजिए! बाबा ने जो सुनाई, वह उनकी नहीं, मेरी कथा है। मेरे मित्र ने सही कहा। कलयुग के दत्तावतार हैं साईं; अन्यथा उन्हें कैसे ज्ञात हुआ कि कभी मेरे तीस हज़ार रुपये चोरी हो गए थे। ठीक तीस हज़ार! न एक रुपया कम, न एक रुपया ज्यादा!! मेरे घर में एक ब्राह्मण रसोइया बरसों से बड़ी ईमानदारी से काम कर रहा था। बुरी संगत में पड़ कर एक दिन उसकी नियत बदल गई। उसने मेरे तीस हज़ार रुपये चुरा लिए। सबूत न होने की वजह से मैं उस पर सीधे-सीधे चोरी का इल्जाम भी नहीं लगा सकता था। मैं बहुत दुखी और परेशान था। उसी समय मुझे एक फ़कीर मिला। उसने बताया कि कोपरगाँव तालुका के शिर्डी ग्राम में एक फ़कीर रहता है।





उसने ही सुझाव दिया, 'उस औलिया की शरण में जाओ! मन में संकल्प करो कि जब तक तुम शिर्डी के उस फ़कीर का दर्शन नहीं कर लेते, अपना प्रिय भोज्य पदार्थ ग्रहण नहीं करोगे। तुम्हें चोरी हुए रुपये वापस मिल जायेंगे।' मैंने वैसा ही किया। अपना प्रिय भोज्य चावल खाना छोड़ दिया। पन्द्रह दिन बाद ही वह रसोइया खुद ब खुद मेरे तीस हजार रुपये लौटाते हुए बोला, 'मालिक! मेरी मति मारी गई थी। मुझसे बड़ा अपराध हुआ। क्षमा कर दीजिए!' मेरे रुपये मुझे वापस मिल गये थे। मैंने उसे माफ़ कर दिया। मैं बहुत खुश था। मैंने उस फ़कीर को बहुत ढूँढ़ा, जिसने मेरी परेशानी दूर करने का उपाय सुझाया था। लेकिन, वह कहीं न मिला। चोरी गया धन वापस पाने की खुशी में मैं शिर्डी जाकर फ़कीर का दर्शन करने का अपना संकल्प और वचन बिल्कुल भूल गया। एक रात कुलाबा में सपने में मुझे साईं बाबा ने दर्शन दिया। तब अचानक मुझे अपने संकल्प का स्मरण हुआ और मैं फ़ौरन गोवा के समुद्र तट पर पहुँचा। वहाँ मुम्बई जाने वाला स्टीमर खचाखच भरा हुआ था। एक अजनबी ने मेरी मदद की और उस स्टीमर में बैठने की जगह दिला दी। श्रीमान शामा जी! आप ही बताइए, एक अजनबी दूसरे अजनबी की मदद क्यों करेगा, जबकि जहाज़ में किसी अतिरिक्त व्यक्ति को बिठाने की जरा भी गुंजाइश नहीं थी। अब समझ में आता है। निसंदेह, वह अजनबी कोई और नहीं, साईंनाथ महाराज ही थे! साईं कहाँ नहीं हैं? वे सर्वत्र हैं, सर्वव्यापी हैं। कण-कण में व्याप्त हैं। ऐसी कौन-सी जगह है, जहाँ साईं नहीं हैं!"

ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं  
जीव-जंतु हर प्राणी  
पत्थर में भी साईं  
कोई जगह बता दे  
हो न जहाँ मेरा साईं  
ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं  
सद्गुरु फ़कीर राजा  
मौला करीम साईं  
जाऊँ किसके द्वारे  
मेरा तो प्रभु है साईं

ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं  
हर होनी का करता  
दत्तावतार साईं  
कितने दीन सँवारे  
दर बैठ द्वारकामाई  
ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं  
जब से तन-मन चुनरी  
साईं रंग रंगाई  
रंग न दूजा सूझे  
सब रंगत-संगत साईं  
ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं  
अब ना कोई बैरी  
ना क़ाफ़िर है कोई  
सब मालिक के बंदे  
मैं किसकी करूँ बुराई  
ऐसी लगन लगी भाई  
जित देखूँ मैं उत साईं

हे दयाघन, साईंनाथ! अपनी आपबीती सुना कर गोवा के उस सज्जन ने शामा से कहा, "साईं ही हमारे दत्त हैं। न जाने हमारे कब के पुण्य रहे होंगे, जो दत्त राज ने हमें साईंनाथ का दर्शन और मस्जिदमाई का तीर्थ कराया। हमें हमारी मनौती का स्मरण कराके देवऋण से मुक्त कराया, हमारा उद्धार किया। अन्यथा हम कहाँ, और कहाँ हमारा ठौर-ठिकाना! फिर भी साईं को हमारे कल्याण की चिंता हुई। हमें सन्मार्ग पर लाने के लिए लीला रची और किसी न किसी प्रकार धागे से बाँधी चिड़ियों की तरह हमें शिर्डी, अपने पास खींच ही लाए।"

(क्रमशः अगले अंक में)

- दास कुम्भेश

बी-२०३, जूही, सेक्टर २, वसंत नगरी,  
वसई (पूर्व) - ४०१ २०८,  
ज़िला पालघर, महाराष्ट्र राज्य.  
ई-मेल : [kumbhesh9@gmail.com](mailto:kumbhesh9@gmail.com)  
संचार ध्वनि : (०)९८९०२८७८२२



## Shirdi News

\* Public Relations Office \*

**Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi**

- Translated from Marathi into English by

**Vishwarath Nayar**

E-mail : [vishwarathnayar@gmail.com](mailto:vishwarathnayar@gmail.com)



Shri Sudhir Mungantiwar, Forests, Cultural Affairs and Fisheries Minister, Maharashtra State availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Smt. Bhagyashree Banayat, the then Chief Executive Officer of the Sansthan greeted him on the occasion.





The *Darshan* facility in Dwarkamai from the '*Dhuni*' started again...











The Shri Saibaba Sansthan has commenced *darshan* facility for the devout-devotees in Dwarkamai from the 'dhuni' as before. Smt. Bhagyashree Banayat, the then Chief Executive Officer of the Sansthan, availing the first *darshan*, inaugurated the re-started facility. Shri Rahul Jadhav, Deputy

Chief Executive Officer of the Sansthan, Dr. Akash Kisave, Shri Dilip Ugale, Shri Sanjay Jori and Shri Kailas Kharade, Administrative Officers, Shri Ramesh Chaudhari, Temple Chief and Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer, were present on the occasion.



**“This is our Dwarkamai! When sitting in the lap of the *Masjid*, she safeguards the children and there will never be any question of worrying. This *Masjidmai* is very kind. She is the mother of all the innocent and faithful devotees. Anyone may face any difficulty, she will readily protect. Once a person settles in her lap, all his difficulties are solved. He who lies in her shadow, he will be on the throne of happiness. This is that Dwarka, Dwaravati!”**

**- Sai Baba -**

## Rs. 175 Crores Income Tax Waived of Shri Saibaba Sansthan

The Income Tax department, while assessing the tax of Shri Saibaba Sansthan for 2015-16, issued a notice for recovery of Rs. 183 crores, being 30 per cent of the donation collected in the donation boxes, considering it to be a charitable trust and not a religious trust. The Income Tax department had not recovered income tax on the donations in the donation boxes for the last two years. However, as per the said decision, it was decided to levy income tax on the donations in the donation boxes of the last two years too and a notice was given to the Sansthan to recover the income tax. A writ petition was filed in the Hon'ble High Court and the Hon'ble Supreme Court. The Hon'ble High Court and the Hon'ble Supreme Court issued a stay order on the income tax, till the tax is decided in the income tax appeal. The income tax appeal

was filed by the Sansthan and ultimately, the income tax department acknowledging that the Shri Saibaba Sansthan is a religious and charitable trust, waived off the income tax levied on the donations in the donation boxes. Thus, the Shri Saibaba Sansthan got a relief of Rs. 175 crores in the income tax collected in the last three years.

For this, with the planning of Smt. Bhagyashree Banayat, the then Chief Executive Officer of the Sansthan and the management committee, Shri S. Ganesh, senior advocate C.A. of Delhi appeared in the Hon'ble High Court and Hon'ble Supreme Court for the Sansthan. Also, valuable guidance was availed from Shri S. D. Srivastav, retired principal secretary in the Income Tax department and Adv. Mohan Jayakar, former Trustee of the Sansthan.



Member of Parliament and Shivsena leader, Shri Sanjay Raut, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan was present on the occasion.





Member of Parliament and Shivsena leader, Shri Sanjay Raut, being felicitated by Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*....

## Shri Datta *Jayanti* Celebrations



The Datta birthday festivity *kirtan* by Shri Ulhas Walunekar, temple priest was held in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* on the occasion of the birthday of Shri Datta. After that the Shri Datta birthday celebrations were celebrated in the presence of Shri Ramesh Chaudhary, Temple Chief, Shirdi villagers and Sai devotees.





Shri Ramesh Chaudhary, Temple Chief, along with his wife, Sou. Alka Chaudhary did the *abhishek pooja* and Shri Dattatraya's *aarati* on the idol and *padukas* of Shri Datta in the Shri Datta temple in Lendibaug on the occasion of Datta Jayanti.



Attractive floral decorations were done in Shri Sai Baba's *Samadhi Mandir*, Shri Datta *Mandir* in Lendibaug and the temple premises with the donation made by Sai devotee, Shri Amit Sarin of Delhi on the occasion of Shri Datta Jayanti. A *Shobhayatra* (ceremonial procession) of Shri Sai Baba's Chariot was taken out through the Shirdi village at 9.15 p.m. After the *Shobhayatra* reached the *Samadhi Mandir* the *Shej Aarati* of Shri Sai Baba was done.





## Shirdi Sansthan Greets the First Nagpur to Shirdi Passenger Bus...







Dr. Akash Kisave, Administrative Officer of the Sansthan, greeted the first Nagpur to Shirdi passenger bus on behalf of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, at 10.15 p.m. on 12.12.2022 (Monday), that was flagged off by Shri Eknath Shinde, Chief Minister of Maharashtra and Shri Devendra Fadnavis, Deputy Chief Minister of Maharashtra, through the Hinduhrdaysamrat Shri Balasaheb Thackeray Maharashtra Samruddhi Expressway that was inaugurated by Prime Minister Shri Narendra Modi.

The worship of the bus was performed by Dr. Kisave on the occasion. Also, Shri

Kiran Pandav, the organizer of the trip, the 47 passengers and the bus driver who arrived along with him were duly greeted with a bouquet. Shri Sunil Shejwal, Public Relations Officer i/c, Shri Prashant Suryavanshi of the Public Relations department, Shri Arun Wabale of the Security department, the Temple Priest and employees of the Sansthan were present in large numbers on the occasion.

This first passenger bus was shown the green flag and flagged off from the Nagpur airport in the afternoon on 12.12.2022 (Monday) by Shri Eknath Shinde, Chief Minister of Maharashtra and Shri Devendra





Fadnavis, Deputy Chief Minister of Maharashtra. This passenger bus reached the Shirdi-Kopergaon Interchange at 10.15 p.m. on 12.12.2022 (Monday).

overwhelmed by the reception given on behalf of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Also, all these passengers, expressing joy, thanked the Sansthan for this.

All the passengers were delightfully



Shri Deepak Kesarkar, Minister for School Education and Marathi Language of Maharashtra State availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...



Smt. Pankajatai Munde, former Minister, Maharashtra State, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, was present on the occasion.



Smt. Pankajatai Munde, former Minister, Maharashtra State, being felicitated by Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...

“Whoever sings with feelings of my life, eulogises my powers, virtues and excellences, I will protect him totally, by surrounding him. Those devotees who have become one with me with heart and soul, they will, naturally, be bound to be happy by listening to the story of my life. Whoever sings my praises, I will bestow upon him complete happiness, permanent pleasure and contentment. Believe this as the Truth.” - Sai Baba





Dr. Akhil Sharma and Dr. Aparna Sharma, the couple from California, donated a cheque of \$ 50,000 (about Rs. 41 lakhs in Indian currency) to the Sansthan. They delivered the said cheque to Shri Kailas Kharade, Chief Accounts Officer i/c of the Sansthan.



Free electrical lighting was done by Shri Ganesh Shete of Shaneshwar Decorators, Shani Shingnapur, in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir*, the temple premises and Shri Sai Baba Hospital and by Shri Sunil Barhate of Sai Samarth Electrical, Shirdi in the new *darshan* line building, at the Shirdi *Mahotsav* (Grand Festival) organized during the Christmas holidays, to bid farewell to the present year and to welcome the new year.









Smt. Sudha Murthy, Indian Educationist and Chairperson of the Infosys Foundation being felicitated by Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, after she availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*.



Smt. Sudha Murthy, Indian Educationist and Chairperson of the Infosys Foundation, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, was present on the occasion.





Shri Bhagwant Khuba, Union Minister of State of Chemicals and Fertilizers and New and Renewable Energy, Government of India, availed the *darshan* of Shri Sai Baba. Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, was present on the occasion.

## Offering Cloth for *Aarati* Available by Lottery

The ad-hoc committee of the Sansthan having decided to make available the offering of cloth by the devout-devotees for all the three *aaratis* for Shri Sai Baba daily, cancelling the reserved slots for *Kakad Aarati* every Thursday and Noon *Aarati* every Sunday, Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan has appealed to the devout-devotees to avail this facility.

Detailing about this, Shri jadhav stated, "The devout desire to offer cloth-wear at the *aarati* of Shri Sai Baba. For this, the Sansthan deciding the functioning in 2016, commenced the offering of cloth daily for three *aaratis* by the devout. Also, at the management committee meeting on May 23, 2017, the committee members had

decided to reserve the offering of cloth at the *Kakad Aarati* every Thursday and the Noon *Aarati* every Sunday. But, with the view to provide the offering of cloth only to the devout at all the three *aaratis* every day, Shri Sudhakar Yargadda, ad-hoc committee Chairman of the Sansthan and Principal District & Sessions Judge and committee member Dr. Rajendra Bhosale, District Collector, underlined. Accordingly, at the committee meeting on December 5, 2022, it was decided to allow the devout to offer cloth on reserved slots on Thursdays and Sundays by draw of lots. Due to this decision, now the devout can avail the benefit of offering of cloth-wear at all the three *aaratis* of Shri Sai Baba daily.

About 1000 cloth-wear are deposited



by the devotees every month at the donation counter. Of this, as per the slot of three *aaratis*, selecting 90 clothes by draw of lots a list is made. Publishing the said list

on the Sansthan's website, the devout are informed through mobile messaging as to which *aarati* their cloth is being offered.



## Farewell to the Last Year... Welcome to the New Year!



Attractive floral decorations were done in Shri Sai Baba's *Samadhi Mandir* and the temple premises with the donation made by Sai devotee, Shri B.A. Basavraja of Bengaluru on the occasion of Farewell to the Last Year and Welcome to the New Year.



**Just as by good fortune, Namdev was found by Gonai in Bhimarathi river and Kabir in a mother-of-pearl shell by Tamal in Bhagirathi river, in the same manner, Shri Sainath appeared for the sake of His devotees in the village of Shirdi, under a neem tree, at the young age of sixteen - *Shri Sai Satcharita***

## **Sansthan Received Rs. 400,17,64,201 Donation Throughout the Year**

Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, informed that the Sansthan received Rs. 400,17,64,201/- donation through various modes from the devout-devotees during the whole year from January 1, 2022 to December 31, 2022.

Shri Jadhav stated about this, "Devout-devotees come in lakhs of numbers to Shirdi for the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* from all over the country and the world. The Sansthan received Rs.

400,17,64,201/- in cash through various modes during the whole year from January 1, 2022 to December 31, 2022. In this the donation boxes count amounted to Rs. 167,77,01,027/-, the donation counters Rs. 74,32,26,464/-, debit-credit cards, online, cheque-D.D. donations and Money Orders Rs. 144, 45,22,497/-, thus totalling Rs. 386,54,49,988/- received in cash and in the form of 26053.270 gms. gold and 330290.440 gms. silver, Rs. 13,63,14,213/- donation was received."





# Awake Surgery of Brain Tumor on 9 Years Old Boy in Shri Sai Baba Hospital Successful!

The Neuro O.T. team of neuro surgeon Dr. Mukund Choudhary and anaesthetist Dr. Santosh Survase having successfully conducted the awake brain surgery (also called awake craniotomy) of brain tumor of a 9 years old boy in the Shri Sai Baba Hospital of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, congratulated the entire neurosurgery team.

Thousands of patients from the length and breadth of the state and outside the state get admitted to the Shri Saibaba Sansthan-run Shri Sai Baba Hospital and Shri Sainath Hospital for various treatments. A total of 60 to 70 brain and vertebra surgeries are done every month in the Neurosurgery department of these hospitals. Of these, a 9 years old boy Kumar Ganesh Gorakh Pawar of Pachegaon, Georai taluka in Beed district, who used to get fits since one year and having taken treatment at various places, was finally brought to Shri Sai Baba Hospital for treatment. After examining him, the doctor advised him to get an MRI done. On doing the brain MRI, a 3x3 cms. (in the shape of a lemon) tumor in the right side of the big brain of the boy was detected. Dr. Mukund Chaudhary, Consultant Neuro Surgeon in the Shri Sai Baba Hospital examined all the reports. The patient's parents were informed that the part of the brain, where the tumor was observed was very delicate, the said part being the source of the nerves that mobilizes the left limbs, the said part getting hit during the operation, the possibility of the boy getting paralysed could not be ruled out. The operation being essential for the recovery of the son, the parents consented to the operation with a heavy heart. Dr. Mukund Chaudhary opined that an Awake Surgery was the right option. During the Awake

Surgery the patient is not given anaesthesia, due to which communicating with the patient can be done. Also, while removing the tumor the strength of the limbs can be monitored frequently, whereby the possibility of getting paralysed can be avoided. Though this matter appears easy on the surface and Dr. Mukund Chaudhary being experienced and an expert in such operations, the real obstacle that came to the fore was that where 9 years old children are afraid of injections, will this boy stay awake and accept to be operated upon? This was a major issue. Senior Anaesthetist



Dr. Santosh Survase's long experience came in handy at this juncture. On consulting him, he agreed to administer anaesthesia without making the patient unconscious. He first gained the confidence of the patient and the parents by making them understand. The co-operation of the boy was very important. Hence, only after explaining everything in detail to the boy and getting his consent, the preparations for the operation were done.

Dr. Santosh Survase administered the anaesthesia only on the skin of the head on December 26, 2022. After that no injection to induce sleep was given to the patient. After that Dr. Mukund Chaudhary removed the complete tumor in about 1 1/2 hours and completed the operation. During the operation the strength of the boy's limbs were being monitored frequently. This monitoring was

possible as the patient was awake during the operation and there was zero pain. In spite of the tumor being removed 100 per cent, the boy had no trouble and the threat of getting paralysed was avoided.

Hence, this surgery on a 9 years old boy's tumor in the brain was unique. Having performed this unique surgery successfully, Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan, Lt. Col. Dr. Shailesh Oak, Medical Director of Shri Sai Baba Hospital and Dr. Pritam Vadgave, Deputy Medical Director congratulated the entire neuro surgery team. Along with this, all the treatment of the patient having been done free of cost under the Mahatma Jyotirao Phule scheme, the father of the patient Shri Gorakh Pawar and family thanked the Shri Sai Baba Hospital and Shri Saibaba Sansthan.

## 8 Lakhs Sai Devotees Availed the *Darshan* of Shri Sai Samadhi

Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, informed that about 8 lakhs Sai devotees availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* during the Shirdi *Mahotsav* (Grand Festival) from December 25, 2022 to January 2, 2023 organized by the Sansthan for the Christmas holidays, bidding farewell to the current year and welcoming the new year and about Rs. 17.81 crores donation was received during this period.

Giving information in detail about this, Shri Jadhav stated, "At the Shirdi *Mahotsav* organized from December 25, 2022 to January 2, 2023 for the Christmas holidays, bidding farewell to the current year and welcoming the new year donations of Rs. 8,78,79,048/- were received in the donation boxes, Rs. 3,67,67,698/- at the donation counters, Rs. 2,15,18,493 through debit-credit cards, Rs. 1,21,02,531 through online donations, Rs. 98,79,973 through cheques/ D.D.s and Rs. 3,21,653 through Money

Orders, thus totalling Rs. 16,84,69,396 received as cash donations. Also, 1.849 kgs. gold (Rs. 90,31,167/-) and 12.696 kgs. silver (Rs. 6,11,478/-) donation was received. Thus, a total of Rs. 17,81,12,041 donation was received by the Sansthan through various modes."

Apart from this, about 8 lakhs Sai devotees having availed Sai *darshan* during this period at the Shirdi *Mahotsav*, it included the services of the Public Relations Office and Online. 1,91,135 Sai devotees having availed of Shri Sai Baba's *darshan* through online and paid *darshan/aarati* passes, Rs. 4,05,12,542 were received through these. Also, 5,70,280 Sai devotees availed free *prasad*-meals in the Shri Sai Prasadalya during this period. And, 1,11,255 Sai devotees availed food packets. Along with this 8,54,220 *ladoo-prasad* packets having been sold, Rs. 1,32,19,200/- was received through this.

Similarly, stay facility was provided to



1,28,052 Sai devotees during this period at the Saiashram Bhaktniwas, Dwaravati Bhaktniwas, Sai Dharmashala, Shri Sai Baba Bhaktniwassthan (500 rooms) and Saiprasad Niwas. Additional stay facility for 16,207 Sai devotees was provided in the *mandap* erected for the same, thus providing stay facility to a total of 1,44,259 Sai devotees. Also, 171 (blood donating) Sai devotees donated blood during the period December 31, 2022 and January 1,

2023.

Shri Jadhav also stated that the donations received by Shri Saibaba Sansthan were utilized for Shri Sai Baba Hospital and Shri Sainath Hospital, Shri Sai Prasadalya free meals, the Sansthan's various educational institutes, for charity of out-patients, various programmes and various social initiatives run and erected for the facility of Sai devotees.



Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, hoisted the flag on behalf of the Sansthan on January 26 Republic Day.

The flag hoisting function was organized by the Shri Saibaba Sansthan at the educational complex ground on January 26 Republic Day. Dr. Akash Kisave,

Shri Dilip Ugale, Shri Sanjay Jori and Shri Kailas Kharade, Administrative Officers of the Sansthan, Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer, all head of departments, employees, as also teaching staff and students of the educational complex were present in large numbers at the programme.

Speaking on the occasion, Shri Rahul Jadhav, Chief Executive Officer I/C of the Sansthan stated, "I commenced my work as Deputy Executive Officer in April 2022. I felt like sharing my experiences while working here with you. Real divinity lies in serving the people and filling satisfaction in the lives of the very poor. A personified example of this is our Shri Sai Baba. It is essential that everyone on this post realize that service should be rendered to the poorest of the poor. After realizing this, duty and responsibility are understood, and, therefore, Baba Himself gives us the inspiration to serve. Officers and employees work here considering every Sai devotee coming for Baba's *darshan* as a form of Sai Baba. Whatever efforts we take to make the *darshan* of every Sai devotee comfortable, will be truly blessed by Shri Sai Baba. The new *darshan* line and educational complex will commence soon. While executing all these works, I always think about what I can do for the employees as the Chief Executive

(Contd. on page 35)

(Contd. from page 34)

Officer. I am expecting a big relief for the employees in the 2009 agreement and the new improved agreement and service entry rules”.

“As head of the family I am trying to do whatever I can do. For the students, I intend

to start NEET and JEE classes for students in the educational complex after 10<sup>th</sup> and 12<sup>th</sup> standards. Also, efforts will be made to provide expensive education like in Kota at Shirdi itself for the wards of the Sansthan’s employees” stating so Shri Jadhav greeted all employees, teaching staff and students on Republic Day with best wishes.







In the evening of Sunday, January 1, 2023



In the night of Sunday, January 1, 2023

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए प्र. मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा गणेश आर्ट प्रिंटर्स, एम.आर. ट्रेड सेंटर, शॉप नं. ७, वाडिया पार्क, अहमदनगर - ४१४ ००१ में मुद्रित और साई निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। \* सम्पादक : प्र. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी